ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

भारतीय शिक्षा में स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान

Swami Dayanand Saraswati's Contribution to Indian Education

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

प्रतिभा यादव
शोधार्थिनी
इतिहास विभाग,
मड़ियाहूँ पी0जी0कालेज
मड़ियाहूँ, जौनपुर,उ0प्र0,भारत

सारांश

स्वामी दयानंद सरस्वती उन महान संतो में से एक है जिन्होंने देश में प्रचलित अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, विभिन्न प्रकार के आडम्बरो व सभी अमानवीय आचरणों का विरोध किया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने तथा हिन्दू धर्म के उत्थान एवं इसके स्वाभिमान को जगाने हेतु स्वामी जी के महत्वपूर्ण योगदान के लिये भारतीय जनमानस सदैव उनका ऋणी रहेगा। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार तथा उनके द्वारा किये गये सामाजिक उन्नति पर अध्ययन करना अति आवश्यक है। जिसका विवरण विभिन्न रचनात्मक प्रयोगों को समग्रता से शामिल करते हुये उनपर विचार किया गया है।

Swami Dayanand Saraswati is one of the great saints who opposed the superstitions, orthodoxies, various types of fanatics and all inhuman practices prevalent in the country. Indian public will always be indebted to Swamiji for his significant contribution in recognizing Hindi as the national language and for uplifting Hindu religion and awakening its self-respect. It is very important to study Swami Dayanand Saraswati's thoughts related to education and social progress made by him. The details of which have been considered by incorporating various creative experiments in totality.

मुख्य शब्द : स्वामी दयानंद सरस्वती, अज्ञानता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता
Swami Dayanand Saraswati, Ignorance, Superstition, Conservatism.

प्रस्तावना

भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन् 1824 ई0 को गुजरात के टंकरा नामक स्थान पर हुआ था। स्वामी जी का बचपन का नाम मूलशंकर था। स्वामी जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत भाषा में ग्रहण की। कई वर्षो तक स्वामी विरजानन्द जी के निर्देशन में उन्होंने समस्त वेदों व उपनिषदों का अध्ययन किया। अपनी शिक्षा दीक्षा पूर्ण होने के उपरान्त वे गुरू के आदेशानुसार देश में फैली अज्ञानता को दूर करने के उद्देश्य से परिभ्रमण करने लगे। अपने देश भ्रमण के दौरान ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। समाज से अज्ञानता, रूढ़िवादिता व अंधविश्वास को मिटाने हेतु 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की।

शोध के उद्देश्य

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के पुनर्जागरण में योगदान का सूक्ष्मता से अध्ययन करना।
2. विभिन्न सामाजिक गतिविधियों से किस तरह मानव कल्याण के लिए किए गये कार्यो के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जीवन में किस तरह जनकल्याण के रूप में कार्य किया, उसका समाज में प्रभाव का अध्ययन करना।
4. स्वामी दयानन्द जी के विचारों का भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में अध्ययन करना।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार 'सत्यार्थ प्रकाश' के समुल्लास में संकलित है। महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति पर बल दिया है। व्यक्ति का शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक विकास ही शिक्षा का लक्ष्य है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय और तृतीय समुल्लास में शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्तो का प्रतिपादन भी किया और एक नया मार्गदर्शन देने की चेष्टा की।

व्यक्ति समाज का इकाई है। व्यक्ति का यदि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक विकास हो जाये तो समाज का शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक विकास स्वतः हो जायेगा। यह तभी सम्भव है जब कि व्यक्ति की उचित शिक्षा हो। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं कि ''सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता–पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा को राज्य का धर्म बताया है, कि वह देखे कि राज्य में कोई भी बालक ऐसा न हो जो कि शिक्षा प्राप्त न कर रहा हो। उन्होंने आदेश दिया कि ''इसमें राज नियम और जाति नियम होना चाहिये कि पांचवे तथा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़को और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज दे और जो न भेजें वह दण्डनीय हो।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने विद्या को केवल पर्याय नहीं समझा, विद्योपार्जन को शिक्षा का एक अंग माना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयत्न

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी शिक्षा नीति को सम्पूर्ण देश में क्रियात्मक रूप देना चाहते थे। उन्होंने आर्य समाज के प्रारम्भिक 28 नियमों में आर्य विद्यालयों की स्थापना का लक्ष्य रखा। 16वें नियम में आर्य विद्यालय का उद्देश्य स्पष्ट करते हुये उन्होंने लिखा – आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्ष ग्रन्थों का पठन–पाठन हुआ करेगा और वेदोक्त रीति से ही सत्य शिक्षा सब पुरूष और स्त्रियों को दी जायेगी। परोपकारिणी सभा के जो उद्देश्य रखे गये उनके पहले उद्देश्य में वेद वेदांग के पढ़ने–पढ़ाने में स्वामी जी की सम्पत्ति का सदुपयोग करने के लिये कहा गया तथा तीसरे उद्देश्यों में आर्यावर्त में अनाथ और दीनजन की शिक्षा और पालन में व्यय करने का उन्होंने निर्देश दिया है।

समाज की उन्नति का विचार करते हुये स्वामी जी का ध्यान स्त्रियों की स्थिति की ओर भी आकर्षित हुआ। उस समय तक स्त्री शिक्षा के तरफ ध्यान नहीं था और न ही उसकी आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा था। परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का मानना था कि हिन्दू–समाज के पतन का एक कारण स्त्रियों का पिछड़ापन भी है।

इस दृष्टि से स्वामी जी आरम्भ से ही स्त्री–शिक्षा पर बल देना आरम्भ किया था। इसी के परिणामस्वरूप महात्मा मुंशीराम और लाला देवराज जैसे आर्य पुरूषों ने कन्या पाठशाला की स्थापना की।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से पहले स्त्री शिक्षा का प्रचार लगभग न के बराबर था। उनका कहना था कि शिक्षा मनुष्य मात्र का अधिकार है जो लोग स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते है वे सर्वथा मूर्ख, स्वार्थी और निर्बुद्धि है। पूना प्रवचन माला के तृतीय प्रवचन में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त करते हुये उन्होंने वर्तमान समाज से आग्रह किया है कि यदि वे सच्चे अर्थो में वैदिक काल में स्त्री शिक्षा को प्राप्त महत्व से परिचित होना चाहते है तो उन्हें आर्य लोगों के इतिहास की ओर देखना चाहिये जिसमें स्त्रियों के आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का उल्लेख मिलता है उन्होंने गार्गी सुलभा मैत्रेयी कात्यायनी जैसी विदुषियों का उदाहरण दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्त्री शिक्षा विषयक जो विचार अभिव्यक्त किये है वे वैदिक संहिताओं में प्रतिपादित स्त्री शिक्षा विषयक धाराणाओं का अनुमोदन करते है। वास्तव में हमारे देश में स्त्री शिक्षा का ह्रास यवन आक्रमण काल से ही प्रारम्भ हुआ था। दासता के उपरान्त हमारे पुरूष समाज को स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन होने के लिये विवश कर दिया था।

निष्कर्ष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मन्दिर बनवाने या विवाह, मृत्यु आदि पर व्यय को रोककर उस धन को शिक्षा में व्यय करने का परामर्श दिया। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मानना था कि हम मनुष्य की समस्त समस्याओं का समाधान शिक्षा के माध्यम से ही कर सकते है। ज्ञान या शिक्षा एक ऐसा मार्ग है जो हमें सत्यासत्य के साथ हिताहित का निर्णय करने की कसौटी प्रदान करता है। यह ज्ञान ही हमें असत्य से सत्य की ओर, तमस से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने वाला है। समस्त संसार का स्वामित्व प्रदान करने वाला यदि कोई है तो वह ज्ञान है। ज्ञान का उपयोग जहाँ प्राणि मात्र का कल्याण कर सकता है तो वही इस सृष्टि का विनाश करने में भी समक्ष है। इसलिये ज्ञान या शिक्षा का स्वरूप और उसकी आधार भूमि ऐसी होनी चाहिये जिसमें से कल्याण के अंकुर फूट सकें। भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नयी पीढ़ी के विचारों को राष्ट्र निर्माण एवं मानव कल्याण की ओर अभिमुख करने के लिये 'शिक्षा पद्धति का स्वरूप' विस्तार के साथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में प्रतिपादित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सम्पादकः पं0 भगवद्दत्तः सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम संस्करण 2012, दिल्ली*
2. *पराशर, संदीपः स्वामी दयानन्द सरस्वती, प्रथम संस्करण 2005, दिल्ली*
3. *भाटिया, सुदर्शनः स्वामी दयानन्द सरस्वती, प्रथम संस्करण 2004, दिल्ली*
4. *मिततल, डा0सतीश चन्द्रः भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास, प्रथम संस्करण 2005*
5. *दास,एम0एन0 ,पुरी0बी0एन, चोपड़ा,पी0एन0 : भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास (3), प्रथम संस्करण 1975*
6. *सम्पादकः शुक्ल, रामलखनः आधुनिक भारत का इतिहास*